सहमत मुक्तनाद

वर्ष: 2 अंक: 7-9 जुलाई-सितंबर 2000

शशिभूषण उपाध्याय

प्रेमचंद - साहित्य में दलित वर्ग

मालिनी [illegible]ाचार्य

प्रतिरोध के रूप में नाट्य-प्रदर्शन: 'भूमंडलीकरण' के दौर में सांस्कृतिक रणनीतियां

सहमत मुक्तनाद

वर्ष: 2 अंक: 7 - 9
जुलाई - सितंबर 2000

यह अंक - 25 रु.
वार्षिक सदस्यता - 150 रु.

संरक्षक मण्डल:
भीष्म साहनी
इरफान हबीब
सुवीरा जायसवाल
हबीब तनवीर

संपादक मण्डल:
के. एन. पणिक्कर
राजेन्द्र प्रसाद
अनिल चौधरी
राजेन्द्र शर्मा
शबनम हाशमी

संपादकीय व प्रबन्ध कार्यालय:
सहमत
8 विट्ठलभाई पटेल हाउस
रफी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
फोन: 3711276, 3351424

संपादन और प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक
टिप्पणियों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिनसे संपादक/प्रकाशक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

सारे भुगतान चैक या बैंक ड्राफ्ट से **सहमत** के नाम से किए जाए।

अनुक्रम

1 **संपादकीय**
मुखौटा तेरा सरक-सरक जाए!

3 **मिशेल वित्जेल**
बैल के धड़ में राजाराम ने सिर घोड़े का जोड़ा

6 **रोमिला थापर**
हिंदुत्व और इतिहास

8 **एडवर्ड सईद से बातचीत**
प्रतिरोध और बौद्धिक का कार्य

13 **नोम चोम्स्की**
फिर फिलिस्तीनी इंतिफादा

17 **शशिभूषण उपाध्याय**
प्रेमचंद - साहित्य में दलित वर्ग

26 **वासंती देवी**
न्याय की गुहार

31 **पी साइसाय**
जब कोई दलित अदालत जाता है

33 **सुखदेव के थोराट**
खोए हुए अवसर की फिल्म: डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर

37 **डा. अर्चना प्रसाद**
आदिवासी विकास और वामपंथी संगठन की भूमिका - चर्चा के मुद्दे

39 **बी एल सिंघवी**
राजस्थान में उदयपुर के आदिवासी बहुल क्षेत्र के विकास के लिए आदिवासी स्वायत्त परिषद् की आवश्यकता

41 **धीरेंद्र के झा**
परदेश की कमाई की कीमत

46 **जवरीमल्ल पारख**
वे ही देखेंगे जो खरीदेंगे

50 **अशोक मित्र**
कलकत्ता डायरी

53 **रामसुजान अमर**
कश्मीर समस्या: इतिहास और राजनीति

56 **डी रघुनंदन**
डी टी एच: किसके द्वारा, किस का, किस के लिए!

60 **सुकुमार**
ईराक के खिलाफ पाबंदियों का ढहना

63 **मालिनी भट्टाचार्य**
प्रतिरोध के रूप में नाट्य-प्रदर्शन: 'भूमंडलीकरण' के दौर में सांस्कृतिक रणनीतियां

69 **प्रभात पटनायक**
गंभीर कृषि संकट में धकेला जाता देश

72 **उत्सा पटनायक**
सन् 2000 में दुनिया में गरीबी

75 **अरविंद मोहन**
बिहार को बचाएगी तो खेती ही बचाएगी

78 **राघव**
चोरी और सीनाचोरी

80 **विष्णु नागर**
चौथे स्तंभ की हकीकत

83 **राजेंद्र शर्मा**
सदी के मोड़ पर हमें तो कुछ ऐसा नजर आया चीन

91 **आस्को पारपोला**
राजाराम के घोड़े, सिंधु लिपि और सभ्यतामूलक प्रश्न

विज्ञापन की दरें

बैक कवर	5,000 रु.
भीतर का कवर	4,000 रु.
पूरा पेज	2,000 रु.
आधा पेज	1,000 रु.

संपादकीय

मुखौटा तेरा सरक-सरक जाए!

बंगारू लक्ष्मण का नाम याद है? और वे संदेश जो भाजपा ने एक दलित को अपने अध्यक्ष के पद पर बैठाकर और नये अध्यक्ष ने अल्पसंख्यक-शत्रुता की भाषा से भाजपा को दूर ले जाने की अपनी लाइन के जरिए दिए थे। बेशक, इन संदेशों को बहुत गंभीरता से लेने के लिए तो कोई भी तैयार नहीं था। वास्तव में, ये संदेश दिए जाने के साथ ही, इन संदेशों को नरम बनाने की कसरत भी शुरू हो चुकी थी, ताकि परंपरागत केसरिया हलके इन्हें ज्यादा गंभीरता से लेने की गफलत न कर बैठें। जैसे इन्हीं हलकों को पूरी तरह निश्चिंत रहने का संदेश देते हुए, प्रधानमंत्री ने पहले नागपुर में और फिर अमरीका में स्टेटन आइलैंड के अपने भाषण में, यह याद दिलाया कि वह सबसे पहले स्वयंसेवक हैं और बहुमत जैसा मौका मिलने की देर है, उनके सपनों का भारत बनाने में चूकेंगे नहीं। फिर भी शायद इतना भरोसा काफी नहीं समझा गया और जैसी कि उम्मीद की जा सकती थी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने, भाजपा से अपने मायावी अलगाव के सहारे, अपनी अल्पसंख्यकविरोधी धार तेज करने के जरिए, बंगारू लक्ष्मण संदेश की जैसे मुश्कें कस दीं। जैसे सिद्धांत के तौर पर बंगारू लक्ष्मण की भाजपा द्वारा खाली की जा रही अल्पसंख्यकविरोधी जगह को भरने के लिए, आर एस एस ने तथा संघ परिवार के अन्य बाजुओं ने बंगारू संदेश के आने के साथ ही अपनी आस्तीनें चढ़ानी शुरू कर दी थीं।

अक्टूबर के मध्य में पहले दिल्ली तथा नागपुर में अपने विजयादशमी संदेशों में और फिर आगरा में आर एस एस के विशाल शिविर में, जिसे "राष्ट्रीय सुरक्षा शिविर" का नाम दिया गया था, आर एस एस के अपेक्षाकृत नए सरसंघचालक ने अल्पसंख्यकों के "भारतीयकरण" यानी हिंदूकरण की अपनी पुरानी मांग बड़े जोर-शोर से उठा दी। ईसाइयों के लिए फर्मान जारी किया गया कि "विदेशी" चर्च से नाता तोड़कर, "स्वदेशी" या भारतीय चर्च खड़ा करें, तो मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि हिंदू देवी-देवताओं तथा धर्म के सामने सिर झुकाना सीखें और इस तरह अपने "भारतीय" होने का सबूत पेश करें। बेशक यह भी महत्वपूर्ण है कि भाजपा के नेतृत्ववाली सरकार में अपनी नंबर टू की स्थिति पर भी अनिश्चितता बनाए जाने से विक्षुब्ध, आडवाणी की उल्लेखनीय उपस्थिति में यह सब हो रहा था। बाद में आडवाणी ने भाजपा से आर एस एस की स्वतंत्रता की दुहाई देकर, तकनीकी तौर पर खुद को इस सब से अलग भी कर लिया और दूसरी ओर, आर एस एस को भाजपा का मार्गदर्शक तथा आर एस एस-भाजपा के रिश्ते को अवच्छिद्य बताकर, अपने लिए आदर्श के तौर पर उस सबको अपनाने का संकेत भी दे दिया। उधर विश्व हिंदू परिषद ने अल्पसंख्यक विरोधी गोलबंदी के अपने अनंत अभियानों के साथ, राम मंदिर के निर्माण की तारीख कुंभ के मौके पर तय किए जाने का एलान कर दिया।

फिर भी, भाजपा अपने ही अध्यक्ष के संदेश को इतनी जल्दी और बाकायदा भुला देगी, इसका अंदाजा तो शायद कटु से कटु आलोचकों को भी नहीं रहा होगा। मगर ठीक ऐसा ही हुआ है। बल्कि इससे भी दो कदम आगे यह हुआ है कि खुद भाजपा ने अपने अध्यक्ष के संदेश को पीछे रखकर, आर एस एस के उसके उल्टे संदेश को प्रचारित करने को प्राथमिकता दी है। जैसे भाजपा में आर एस एस की सर्वोच्चता स्थानीय करने के लिए ही, आर एस एस का घर-घर जाकर अपने संबंध में लोगों की भ्रांतियां दूर करने का अभियान, ठीक उसी समय आ पड़ा जब, भाजपा को अपने अध्यक्ष का नागपुर संदेश देश के कोने-कोने में पहुंचाने का अभियान चलाना था। तारीखों के इस टकराव ने भाजपा के लोगों की वफादारियों को एक परीक्षा सी में डाल दिया। फिर जैसा कि होना ही था, आर एस एस के अभियान को खुद भाजपा से भी स्पष्ट प्राथमिकता मिली। यहां तक कि महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में तो भाजपा की इकाइयों ने बाकायदा यह निर्णय ही कर लिया कि पहले अपनी ऊर्जा आर एस एस के अभियान में लगाएंगी। जाहिर है कि बंगारू लक्ष्मण का संदेश, इस अभियान के पूरे होने तक प्रतीक्षा कर सकता है! इससे भिन्न उत्तर प्रदेश समेत दूसरे अनेक राज्यों की भाजपा इकाइयों ने, दूसरी व्यस्तताओं के बहाने से बंगारू लक्ष्मण के संदेश के प्रचार को उठाकर ताक पर रख दिया है। जाहिर है कि आर एस एस के अभियान के मामले में ऐसा ही रुख अपनाने की उन्हें न तो जरूरत महसूस हुई है और न ही ऐसा करने की उनकी हिम्मत हुई है।

बहरहाल, यह हश्र बंगारू लक्ष्मण के अल्पसंख्यक-शत्रुता की भाषा को छोड़ने के संकेत के साथ ही नहीं हुआ है। खुद बंगारू लक्ष्मण को भाजपा अध्यक्ष बनाए जाने में निहित, भाजपा में दलितों व अन्य निचली जातियों का भी स्थान होने के संदेश का भी ऐसा ही हश्र हुआ है। यह इसके बावजूद है कि गुजरात में 1985 के आरक्षणविरोधी आंदोलन के दौरान हिंसा के लिए आरोपित केंद्र सरकार के मंत्री हरिन पाठक तथा गुजरात की भाजपा सरकार के ताकतवर मंत्री अशोक भट्ट से, वाजपेयी को शोर मचते ही इस्तीफा ले लेने की तत्परता दिखानी पड़ी है। आज भाजपा कम से कम अस्सी के दशक के मध्य के अपने पिछड़ाविरोधी अभियानों की याद दिलाने के लिए, इस मुद्दे का ज्यादा उछलना अफोर्ड नहीं कर सकती है। बहरहाल, देखने-दिखाने वाले ढंग से बंगारू लक्ष्मण की भाजपा के दलित-मित्र संदेश का यह हश्र हुआ है उसी उत्तर प्रदेश में, जहां से भाजपा में "सोशल इंजीनियरिंग" की जरूरत बाकायदा स्वीकार किए जाने की शुरूआत हुई थी। बाबरी मस्जिद के ध्वंस के रूप में बहुसंख्यक सांप्रदायिकता पर आधारित गोलबंदी को चरम बिंदु पर पहुंचाने और इस 'गौरव' से सीधे जुड़े कल्याणसिंह को 'राम मंदिर के लिए कुर्बान